International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

संगीत में श्री कृष्ण की अप्रत्यम देन

लोकेश शर्मा
vflLVsV izksQslj] laxhr foHkkx
jktdh; dU;k egkfo|ky;] l&14] xq:xzke

श्री कृष्ण का उल्लेख वैदिक ग्रंथों प्राचीन भारतीय साहित्यों पुरालेखों प्रशस्तियों में खूब देखने को मिलता है यहाँ तक की अनेक ताम्रपत्तों में भी श्री कृष्ण की स्तुति का गुणगान मिलता है, अभिलेखों में श्री कृष्ण के अनेक नाम उल्लेख है, श्री कृष्ण का अर्थ है 'आकर्षण' अर्थात जो बरवस अपनी ओर खींच लेता है। उनकी सन्निधि पाकर चित्त का शुद्धीकरण स्वतः ही हो जाता है। ब्रह्मसंहिता में कृष्ण को ही ब्रह्म माना है जिसकी पुष्टि अन्य शास्त्र भी कर रहे हैं। भगवान के सभी रूपों में श्री कृष्ण परम आकर्षक है भारतीयों की साँस में बसे श्री कृष्ण सबसे व्यापक देव है और गंभीर दार्षनिक चिंतन के सारभूत गीतोपनिशद के गायक भी है। श्री कृष्ण सोलह कलाओं के अवतार हैं। श्री कृष्ण अपने व्यक्तित्व के आयाम, विविधता और विचित्रता में अद्विितीय gSA

कृष्ण ने अपनी विभूतियों का निरूपण करते हुए स्वयं का osnksa esa *lkeosn^ crk;k gSA rSfÙkjh; lafgrk esa fn;k x;k gS fd nsork _d vkj ;tqosn dh vis{kk rUe;hHkou djs fy, lkeosn dk gh lgkjk ysrs gSA

**txkg ikB;s _Xosnkr~ lkeH;ks xhresao pA

;tqosZnkfHkku;ku~ jlkukFkoZ.kknfiAA**[1]

उपर्युक्त श्लोक के अनुसार ब्रह्मा us ukVd dh ikB~; lkexh *_Xosn^ ls xhr *lkeosn^ ls vfHku; dyk *;tqosZn^ ls rFkk jl & lkexh *vFkoZosn^ ls xzg.k dh gSA

''कृष धातु का अर्थ है सत्ता और निवृत्ति वाचक अर्थात्

आनंन्द का घोतक है, दोनों के योग से कृष्ण बना''[2]

भगवान श्री कृष्ण ने ही यमुना तट पर वेणुनाद पूर्वक रसों के समूह रूप रास की सृष्टि की। नाट्यवेद को हल्लीष या हल्लीसक–क्रीडन के रूप में प्रचलित किया। इस सामूहिक हल्लीसक क्रीडा का ही चरम विकसित रूप हम 'श्रीमदभागवत' की रास पंचाध्यायी में वर्णित शारदीय jklØhMk e: ikr: gqA bl jkl ØhMk dk cht :Ik e: सूत्रपात कृष्ण के सर्वभूत मनोहर संगीत से gkrk gqA

संगीत में श्री कृष्ण का विस्तार वर्णन मिलता हैं उसका उत्स 'श्रीमदभागवत्' ही प्रतीत होता है।

परवर्ती हिन्दी साहित्य में वेणु शब्द स्त्रीलिंग के रूप में प्रयोग हुआ है। ब्रजभाषा कृष्णकाव्य में rk clh] ckl:jh e:jyh] मुरलिया, बंसरिया आदि स्त्रीलिंग शब्दों का ही प्रयोग हुआ है। वेणु का लोकभाषा रूप वेनु भी स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हुआ है।

JhenHkkxor e: vf/kdrj o.k oknu dk mYy[k n[ku dk feyrk gqA ckl d o{kk l: ok| या बंसी का निर्माण कर कृष्ण का मुरली से यह घनिष्ट सम्बन्ध गहरी पैंठ बनाए हुए है।

कृष्ण के उनके मुरली के प्रभाव को लेकर भारतीय साहित्य में सृजनात्मक और एकात्मता के दर्शन होते है। संगीत के इसी भागवत सम्बन्ध ने हमारी सभी भारतीय भाषाओं में कृष्ण के वंसीवादन चातुर्य और वंशी ध्वनि के अनुपम प्रभाव का लेकर इतनी विशाल और रसमयी साहित्य dh jpuk dh gqA

कृष्ण और उनका वेणु या वंशी गीत समस्त भारतीय साहित्य (विषेशकर मध्यकालीन भारतीय साहित्य) एक प्रिय वर्ण विषय है। भगवान कृष्ण का वंशी वादन ऐसा था कि मनुष्य ही नहीं अपितु पशु जगत तक स्थिर हो जाता था। जब कृष्ण ने नृत्य किया तो ऐसा किया कि शेषनाग का मस्तक क्षत विक्षत हो गया। रास किया तो ऐसा किया की महारास बना दिया। भगवान कृष्ण dh gj yhyk vnHkqr FkhA

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

श्रीमदभागवत् में श्री कृष्ण को अवतारी माना गया है तथा उनके सभी रूपों का विवरण दिया x;k gSA Hkkxor e sa ok|k sa dk vnHkqr o.kZu gS Hkkxor~ e sa ok|k sa vkj ok|k sa dh /ofu dk vnHkqr fp=.k iklr gkrk gSA Hkkxor~ e sa vu sd xhrk sa dk Hkh mYys[k gqvk gS tSl s o.kqxhr] xkfidk गीत, युगल गीत, भ्रमर गीत, द्वारका की श्री कृष्ण की पत्नियों के गीत, पिगंला गीत, भिक्षु गhr] ,sy xhr vkfn bu xhrk sa e sa ok|k sa dk vu sd y fooj.k n s[ku s dk s feyrk gSA

वेणु गीत में श्री कृष्ण की वंशी की मधुर ध्वनि को सुनकर ब्रजवासि अपनी सुध–बुध खो बैठती है और स्वयं को स्वपन में कृष्ण के साथ देखती है।

**;k xkid jujou u;uk: ikj o.k Lou% dYin Lru HkR l l[;%

अस्पन्दनं गीतमतां पुलकस्तरूणं निर्योगपाष कृत लक्ष्णयोर्विचित्रण''[3]

**vFkkr l[kh! bu lkoj&गोरे किशोरों की गति ही निराली है। जब से सिर पर नोवना (दुहते le; xk; d s i sj e sa ck/ku s dh jLlh½ yiVdj vkj dU/k s ij Qnk ¼Hkkxu s okyh xk; k sa dk s idMu s dh jLlh½ j[kdj xk; k sa dk s ,d ou l s n qlj s ou e sa gk ddj y s tkr s g S] lkFk e sa Xokycky Hkh gkr s g S vkj e/kj lxhr xkr s g q, ck lqjh dh rku N sM+r s g S] rk s ml le; l s मनुष्यों की चाल ही बदल जाती है। मनुष्य, पशु, पक्षी, नदियाँ तक स्थिर हो जाती हैं। अचल वृक्षों को भी रोमांच हो जाता है, जादूभरी वंषी का और क्या चमत्कार सुनाऊँ।''

o s.kq xhr dk mn;%&

''शास्त्रों के अनुसार जब श्री कृष्ण वृंदावन में पधारे तब यहाँ के पद्याभोदित वायु के संस्पर्श एवं HkkMfogMek s d s dy[k dk s Jo.k dj mlls mUgs o stnfo;k s dk Lej.k gqvk vkj mlh स्मर–भाव विषेश रूप उद्धीपन विभाव से वेणुगीत का उदय हुआ।''[4]

vFkok

rk lkeo Lej s.k Lej.ku mn;k ;L; r s Lejkn;e

अर्थात विचित्र कोकिला आदि के मधुर शब्द के श्रवण से वृषभानुनन्दिनी श्री राधा का स्मरण होने ls o.kxhr dk mn; gqvk**[5]

भगवान के सभी रूपों में श्री कृष्ण परम आकर्शक हैं। ''गर्ग संहित के गोलोक खण्ड के अध्याय चतुर्थ में विवरण मिलता है कि पूर्वकाल में श्रुतियो ने श्वेतद्वीप में जाकर श्री कृष्ण का स्तवन किया, तब सहस्त्रपाद विराट पुरूष प्रसन्न हो गये और उनसे कोई वर माँगने को कहा तब Jqfr;kq ckyh Hkxoku! vki eu ok.kh ls ugha tkus tk ldrs vr% ge vkidks tkuus esa vleFkZ gSa ;fn vki ojnku nsuk pkgrs gSa rks ;gh nhft, fd vkidk djksMks dkenoksa ds leku euksgj Jh foxzg dk n'kZu djds ge esa Hkh dkfeuh Hkko vk tk, ge vkils feyus dh उत्कट अभिलाषा हो रही है। हम विरह – ताप – सन्तप्त हैं तब श्री कृष्ण ने उत्तर दिया की rqEgkjk ;g ojnku सत्य अवश्य होगा। उसी वरदान स्वरूप वे श्रुतियाँ ही ब्रज की गोपियाँ बनकर अवतरित हुई जिनके साथ श्री कृष्ण ने महारास की रचना की।''[6]

''श्रीमद्भागवत् पुराण के दसवें स्कन्ध के 35वे अध्याय में युगलगीत के अन्तर्गत श्री कृष्ण को ckalqjh dh e/kqj /ofu dh efgek ds lUnHkZ esa crk;k gS fd uVukxj tc viuh ck;ha dykbZ dks ck;ha ckag dh vksj yVdk nsrs gSa vkSj viuh HkkSgsa upkrs gq, ckalqjh dks v/kjksa ls yxkrs gSa rc viuh lqdqekj vaxqfy;ksa dks mlds fNnzksa ij fQjkrs gq, e/kqj rku NsM+rs gSA ml le; सिद्ध पत्नियाँ आकाश में अपने पतियों ds lkFk foeku ij p<dj vk tkrh gSa vkSj ml rku dks lqudj vR;Ur pfdr vkSj fofLer gks tkrh gSa**[7]

कृष्ण भक्त कवि :–

1½ lwjnkl %&

सूरदास जी ने कृष्ण के मौखिक गान का उल्लेख किया है।

''गावत श्याम श्यामा संग
lq/kj xfr vykifr] lqj fi; lax**[8]

ljnkl xm?kkV ij jgr Fk] rc cgr lUnj in cuk cukdj xkr Fk] ftlls mudk cgr से शिष्य भी बन गए।

2½ Lokeh ijekuUn %&

कश्मीरी भाषा के रसासिद्ध कवि स्वामी परमानन्द कृष्ण की मुरली ध्वनि का ध्यान आते ही xkih Hkko ls Hkkfor gk tkr gA

**jk/kkf; pfr pfr okn vkf;.k /ofu]
Ukn vkf; ejyh ckt kuk]
Nkikfj Qhfj dkfuNflycku
Ekjyh vkN nfj ckt kck**[9]

अर्थात राधा आदि सब गोपियाँ कृष्ण के चरण चिन्हों को देखने लगी। जिधर से मुरली की /ofu vk jgh Fkh] m/kj nkM tkrh Fkh ijUr ml ejyh /ofu rd ugh igp ikrhA

3) सम्राट चेरूशशोरि :–

केरल के भक्त कवि सम्राट चेरूशशोरि अपनी प्रख्यात कृति कृष्ण राधा गाथा में कहते हैं कि कृष्ण के मधुर वेणु नाद से आकर्षित होकर मछलियाँ तैरना भूलकर पूँछों से चलकर कृष्ण के lehi igp tkrh FkhA

4½ Jh ifj;kyokj %&

तमिल दिव्य प्रबन्धम् श्री पेरियालवार ने अपनी कृति विष्णुचित 7वीं शती में कृष्ण के वेणुवादन प्रभाव के बारे में बताया। उनका कहना था कि कृष्ण की मुरली की ध्वनि सुनकर विविध जाति के पक्षी एक के ऊपर एक बैठकर एक विशाल पर्वताकार महारण्य निर्मित कर fn;k djr FkA

5½ lqcã.; Hkkjrh %&

आधुनिक युग के राष्ट्रीय महाकवि सुब्रह्मण्य भारती ने कृष्ण के वंशी वादन के प्रभाव की कल्पना करते हुए कहा है कि कृष्ण का वंशी वादन सुनकर गोपियों का मुंह खुला रह जाता था और फिर कृष्ण उनके मुँह पर पानी की छीटें डालकर उन्हें जगाते थे। bl izdkj dh fofp= ØhMk dh dYiuk lqcã.; Hkkjrh th us dh gSA

6½ ehjkckbZ %&

मीराबाई के काव्य की आत्मा भक्ति है, मीरा ने अपने गीतों में कृष्ण का चित्रण व चिन्तन विहवल प्रणयिनी बनकर किया है। उन्होंने कृष्ण को ही अपना पति, इष्ट व सर्वस्व माना है तथा प्रणय–धृष्टrk ds dkj.k mudh vUrjre dh ok.kh Lojks ds :i esa iLQqfjr gks mBh gSA

**ekjh pquj Hkhtsa esjs fHktkÅxh ikx]
Ukkn egj th dks dqoj dUgS;k]
tkus u nqxh vkt**[10]

bl izdkj xkih :i esa Hkkoksa dh vfHkO;fDr djus okyh ehjk ds ;equk ds rV ij xyh &गलियारों वन–उपवन में कृष्ण की प्रेमलीलओं का गुणगान किया।

कृष्ण रस दर्शन

''उपनिशदों में रसो वै रसः की उपाधि भगवान् श्री कृष्ण को ही दी गयी है। रसों वे रसः vFkkZr~ jl ls tks lEcU/k gS og jl dgykrk gS] bl izdkj *jlkuk leg jkl% vFkkZr~ jl dk leg jkl lKd gS**[11]

श्रीमदभागवत गीता में श्री कृष्ण को ही सत्यं शिवम सुन्दम् रूप देकj iLrqr fd;kA

श्री कृष्ण सभी रसों से परिपूर्ण है। सभी रसों में श्रृंगार रस प्रधान है अतः ब्रह्मा भी श्रृंगार dk Lo:i gS]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

''भगवांष चैक एवं तथा च तत्रत्या सर्वा सामग्री

Rnl : iofr loeuo|e**[12]

vFkkr Hkxoku ,d gh g vRk% jl lEcfU/kuh leLr lkexh foHkkokuHkko bR;kfn dk Hkxon :Ik gkuk d dkj.k jl :Ik gh gA

भगवान श्री कृष्ण का रति रूप स्थाथी भाव उनसे अलग नहीं है वे भाव और रस दोनों है। jl dk vkyEcu Hkh ogh gA blh idkj xkfidkvk dk jfr नामक स्थाथी भाव श्री कृष्ण vkj mlI Hkko dk vkyEcu Hkh ogh gA

भगवान श्री कृष्ण ने तो राग से वैराग्य पैदा कर दिया। बहुत अजीब लगता है यह सोचकर dh ckl jh ctkdj Hkh dkbZ cã dk ik ldrk gA ;k uR; djd lkf/kLFk gk ldrk g ijUr ;g okLrfodrk g D;kfd ckl jh dh ukn dh vfUre voLFkk lekf/k gh gA Jh कृष्ण ने गोपियों d lkFk egkjkl jpkdj vkRek vkj ijekRek dh ckr fl) dh gA Jh कृष्ण ने किसी भी सिद्धांत को उन्होंने स्वयं देखा उसके बाद ही समाज में उतारा। व्यास जी का कहना है कि कृष्ण के कुछ ऐसे मंत्र हैं जिनको जपने से अष्ट सिद्धी निधियाँ प्राप्त हो tkrh gA

Hkkjrh; lxhr e[;r% pkj jl iea[k g%&

¼1½ J`xkj ¼2½ d:.k (3) शान्त ¼4½ ohj

इन चार में भी वीर रस को छोड़कर शेष तीन का प्रमुख लगभग हर क्षेत्र मिलता हैं, इन तीन रसो में श्रृंगार रस अत्यधिक व्यापक होने के कारण विशेष महात्वपूर्ण है, कृष्ण भक्त dfo;k u ,d gh ilx e vud jkxk dk i;kx fd;k vkj ,d gh jkxk e fofHkUu jlk dh in jpuk Hkh dh g] tl%&

**fcjfd ukjh n xkfj fxfj/kkjh
rc iN ij ykr n vkfg txk;k**[13]

rFkk

**jkf/kdk lx feyh xki ukjh
pyh fgfyfefy lc] jgfl fcgl fr r:fu
ijLij dkrgy djr ekjh**[14]

उपर्युक्त पद राग मारू में हैं तथा विभिन्न रसों के पोषक हैं। वात्सल्यमय कवियों का कृष्ण d i:fr ogh Hkko g t lk ek dk cPp d lkFk gkrk gA ek l vyx gku d ckn tk छटपटाहट दयनीय अवस्था का जो अनुभव एक बच्चे को होता है वही स्थिति कृष्ण के प्रति bu dfo;k dh jgh gA

कृष्ण कवियों ने श्रृंगार, वात्सल्य व करूण इन तीनों रसों का ही अधिकतम प्रयोग किया है। कहीं कहीं शांत, अदभुत व वीर रस भी देखने को मिल जाते है। श्रृंगार रस मानव– जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। कृष्ण का उद्घोष केवल भारत में ही नहीं अपितु leLr nfu;k में है। कृष्ण चेतना का आन्दोलन यूरोप, अमेरिका में जोर पकड़ता जा रहा है। जैसी कृष्ण भक्ति भारत मे देखने को मिलती है वही आज न्युयार्क व लन्दन की सड़कों पर कृष्ण कीर्तन d :i e luk;h nrk gA bldk iR;{k iek.k oUnkou] eFkjk e n[ku dk feyrk gA यहाँ सैकड़ों विदेशी कृष्ण की भक्ति में लीन दिखाई देते है। न जाने कितने ऐसे विदेशी भक्त है जो कृष्ण के प्रति अपना जीवन न्यौछावर करके कृष्ण के धाम में वास किए हुए हैं।

lanHk lwph

1- नाट्यशास्त्र 1-17

2- कृष्ण का धर्म दर्शन, डा0 विजय लक्ष्मी यादव, मिशन प्रकाशन कानपुर, पृ0 72

3- श्रीमद्भागवत पुराण, 19वाँ श्लोक पृ0 263

4- भक्ति सुधा, स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती, श्री राधा कृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, पृ0 434]

5- भक्ति सुधा, स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती, श्री राधा कृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, पृ0 435]

6- श्री कृष्ण का धर्म दर्शन, डा0 विजय लक्ष्मी यादव माधव, मिशन प्रकाशन कानपुर, पृ0 80,

7- श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध चेदव्यास, प्रकाशक घनश्यामदास जालान, गीता प्रेस xkj [kiqjA

8- lqjlkxj] i0 172

9- कश्मीरी भाषा एवं काव्य (आजाद), भाग 2] i0 43

10- मीरा की शब्दावली, पृ0 330

11- संगीत भक्ति धाराः संगीत और काव्य, डा0 अनीता जौहरी, प्र0 241, अल्पना प्रकाशन, बरेली ¼m0 i0½

12- fo0 e0] i0 316

13- डा0 दीनदयाल गुप्त, अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय भाग 2, पृ0 761

14- ehjk dk in] i0 118